

दिल्ली सल्तनत- I (1200-1400) (गुलाम वंश)

प्रलिम्स के लिये:

इलतुतमशि, कुतुबुद्दीन ऐबक, रजिया सुल्तान, बलबन

मेन्स के लिये:

दिल्ली सल्तनत का प्रशासनिक तंत्र, दिल्ली सल्तनत में बड़प्पन का महत्त्व

कुतुबुद्दीन ऐबक (1150-1210) ने प्रथम मुस्लिम राजवंश की स्थापना कैसे की?

- कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली सल्तनत का स्थापक और गुलाम वंश का पहला सुल्तान था। यह गोरी साम्राज्य का सुल्तान मुहम्मद गोरी का एक गुलाम था। वर्ष 1206 में मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को अपना उत्तराधिकारी बनाया। उसने तराइन के युद्ध (1192 ई.) के बाद भारत में तुर्की सल्तनत के वसितार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- मुइजुद्दीन का एक और गुलाम, यलदुज़ (Yalduz), गजनी (गजनी) में सफल हुआ। गजनी के शासक के रूप में यलदुज़ ने दिल्ली पर भी शासन करने का दावा किया।
- हालाँकि यह लाहौर से शासन करने वाले ऐबक द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था लेकिन इसी समय से सल्तनत ने गजनी से अपने संबंध तोड़ लिये थे।
- गुलाम वंश की स्थापना का श्रेय कुतुबुद्दीन ऐबक को जाता है।
- गुलाम वंश, जिसे मामलुक वंश (Mamluk Dynasty) के नाम से भी जाना जाता है, भारत में दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला पहला मुस्लिम राजवंश था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को लाख बकश (Lakh Baksh) के नाम से भी जाना जाता है।

इलतुतमशि (1210-36) ने अपने क्षेत्र का वसितार कैसे किया?

- वर्ष 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गरिकर घायल होने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई।
- उसका उत्तराधिकारी इलतुतमशि था जो ऐबक का दामाद था।
- इलतुतमशि को उत्तर भारत में तुर्की वजिय का वास्तविक समेकक माना जाना चाहिये।
 - अपने राज्याभिषेक के समय अली मर्दन खान ने स्वयं को बंगाल और बहिर का राजा घोषित कर दिया था।
- सबसे पहले दिल्ली के पास इलतुतमशि के कुछ साथी अधिकारी भी उसके अधिकार को स्वीकार करने के लिये अनिच्छुक थे। राजपूतों को अपनी स्वतंत्रता का दावा करने का अवसर मिला। कालजिर, ग्वालियर और पूर्वी राजस्थान के क्षेत्र, जसिमें अजमेर एवं बयाना शामिल थे, ने सफलतापूर्वक स्वयं को तुर्की के प्रभुत्व से मुक्त कर लिया।
- लगभग इसी समय इलतुतमशि ने ग्वालियर, बयाना, अजमेर और नागौर को पुनः प्राप्त करने के लिये कदम उठाए।
- अपने शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों के दौरान इलतुतमशि का ध्यान उत्तर पश्चिम पर केंद्रित था। ख्वारजिम शाह द्वारा गजनी की वजिय के साथ उनकी स्थिति के लिये एक नया खतरा पैदा हो गया।
 - ख्वारजिमी साम्राज्य इस समय मध्य एशिया में सबसे शक्तिशाली राज्य था और इसकी पूर्वी सीमा अब सधु तक फैली हुई थी। इस खतरे को टालने के लिये इलतुतमशि ने लाहौर की ओर कूच किया तथा उस पर अधिकार कर लिया।
- ऐबक के साथी गुलाम कुबाचा (Qubacha) ने खुद को मुल्तान का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया था और लाहौर तथा पंजाब के कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया था।
- इलतुतमशि ने कुबाचा को मुल्तान और उच (Uchch) से भी बाहर कर दिया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत की सीमाएँ एक बार फिर सधु तक पहुँच गईं। पश्चिम में सुरक्षित इलतुतमशि अपना ध्यान कहीं और लगाने में सक्षम था। उसने अपने पड़ोसियों, पूर्वी बंगाल के सेना शासकों और उड़ीसा तथा कामरूप (असम) के हद्वि शासकों के क्षेत्रों पर छापे मारे।
- बंगाल और बहिर में इवाज नाम के एक व्यक्ति, जसिने सुल्तान गयासुद्दीन की उपाधि धारण की थी, स्वतंत्रता ग्रहण की। 1226-27 में लखनौती के निकट इलतुतमशि के पुत्र के साथ युद्ध में इवाज पराजित हुआ और मारा गया। बंगाल और बहिर एक बार फिर दिल्ली के प्रभुत्व में आ गए।
- उसने रणथंभौर और जालोर के वरिद्ध अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिये अभियान चलाया।
- उसने मेवाड़ की राजधानी नागदा (उदयपुर से लगभग 22 किमी.) पर भी हमला किया, लेकिन गुजरात की सेनाओं के आगमन पर उसे पीछे हटना पड़ा।

प्रतशिोध के रूप में इलतुतमशि ने गुजरात के चालुक्यों के खिलाफ एक अभियान चलाया, लेकिन इसे नुकसान के साथ खदेड़ दिया गया।

रजिया सुल्तान (1236-39) इलतुतमशि की उत्तराधिकारी कैसे बनी?

- इलतुतमशि ने अपनी पुत्री रजिया को गद्दी पर बैठाने का नशिचय कया।
- अपने दावे को मुखर करने के लयि रजया को अपने भाइयों के साथ-साथ शक्तशाली **तुर्की अमीरों** के खिलाफ भी संघर्ष करना पड़ा और वह केवल **तीन वर्ष तक ही शासन** कर सकी।
- इसने राजशाही और **तुर्की प्रमुखों** के बीच सत्ता के लयि संघर्ष की शुरुआत को चहिनति कया, जसै कभी-कभी 'चालीस' या चहलगानी कहा जाता था।
 - **फोर्टी/चहलगानी की कोर 40 तुर्क गुलाम अमीरों** की एक परषिद थी, जो सुल्तान की इच्छा के अनुसार **दिल्ली सल्तनत** का प्रशासन करती थी।
- **इलतुतमशि का वजीर नजाम-उल-मुल्क जुनैदी**, जसिने उसके सहिसन पर बैठने का वरिध कया था और उसके खिलाफ रईसों के वदिरोह का समर्थन कया था, हार गया और भागने के लयि मजबूर हो गया।
- **रजिया** ने **राजपूतों** को नयित्तरति करने के लयि **रणथंभौर** के खिलाफ एक अभियान भेजा और अपने राज्य में **कानून एवं व्यवस्था** को सफलतापूर्वक स्थापति कया।
- एबसिनियिन रईस, **याकूत खान को शाही असतबल का अधीक्षक नयिक्त कया** गया था और वह रजया सुल्तान का पक्षधर था।
 - **तुर्की रईसों ने उन पर स्त्री-वनिमरता का उल्लंघन करने का आरोप लगाया** और याकूत खान के साथ बहुत दोस्ताना व्यवहार कया।
- **लाहौर** और **सरहदि** में वदिरोह भड़क उठे। **रजया** ने व्यक्तगित रूप से **लाहौर** के खिलाफ एक अभियान का नेतृत्व कया एवं शासक को प्रस्तुत होने के लयि मजबूर कया।
- **सरहदि** के रास्ते में एक आंतरकि वदिरोह छड़ि गया जसिमें **याकूत खान** मारा गया और **रजया** को **तबरहनिदा** में कैद कर लया गया।
- हालाँकि **रजया** ने अपने **कैदी, मलकि अलतुनया** पर जीत हासलि की और उससे शादी करने के बाद दिल्ली पर नए सरि से प्रयास कया। **रजया** ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन जब वह जीत के करीब थी तभी डाकुओं द्वारा एक जंगल में उसे हरा दिया गया और मार डाला गया।

मंगोलों का उदय:

- **मंगोल साम्राज्य** ने वर्ष **1221 से 1327 तक भारतीय उपमहाद्वीप** पर आक्रमण करने के कई प्रयास कयि।
- **मंगोलों का उदय** मंगोल नेता **चंगेज खान** के आगमन के साथ शुरु हुआ, जो खुद को **'ईश्वर का अभिषाप'** कहने में गर्व महसूस करता था।
- **मंगोलों** ने 1218 में **ख्वारज्मी साम्राज्य** पर हमला कया।
 - **मंगोल आक्रमण का दिल्ली सल्तनत** पर गंभीर प्रभाव पड़ा।
- **इलतुतमशि**, जो दिल्ली पर शासन कर रहा था, ने **मंगोलों** को शांत कराने करने की कोशिश की।
- इसके परिणामस्वरूप **मंगोलों** के हमलों की एक शृंखला हुई और सधु नदी भारत की पश्चिमी सीमा नहीं रही।
- अंततः **इलतुतमशि लाहौर** और **मुल्तान** दोनों को जीतने में सक्षम था, **इस प्रकार मंगोलों** के खिलाफ रक्षा की काफी मज़बूत रेखा बन गया।
- वर्ष **1227** में **चंगेज खान** की मृत्यु के बाद शक्तशाली **मंगोल साम्राज्य** उसके पुत्रों में वभिजति हो गया।

बलबन सत्ता में कैसे आया (1246-87)?

- **पृष्ठभूमि:**
 - राजशाही और तुर्की प्रमुखों के बीच संघर्ष प्रमुख मुद्दों में से एक था जो **उलूग खान** तक जारी रहा जसै इतिहास में **बलबन** की उपाधिसे जाना गया।
 - समय के साथ उसने राज्य पर नयित्रण कर लया और वर्ष **1265** में वह सत्तारूढ़ होने में सफल रहा।
 - इससे पहले **बलबन** ने **इलतुतमशि** के छोटे बेटे **नसीरुद्दीन महमूद** के यहाँ नायब या डपिटी का पद संभाला था जसै **बलबन** को वर्ष **1246** में सहिसन प्राप्त करने में सहायता की थी।
 - **बलबन** ने नसीरुद्दीन महमूद की पुत्री से शादी करके युवा सुल्तान के लयि अपनी स्थितिको और सुदृढ़ कर लया।
 - **बलबन** के बढ़ते अधिकार ने अनेक **तुर्की प्रमुखों** को अलग-थलग कर दिया जिन्होंने **नसीरुद्दीन महमूद** के युवा और अनुभवहीन होने के कारण **सत्ता के मामलों** में अपनी पूर्व शक्तियों एवं प्रभावों को बनाए रखने की आशा की थी।
 - अतः उन्होंने वर्ष **1253** में एक षड्यंत्र रचा और **बलबन** को उसके पद से बेदखल कर दिया।
 - **बलबन** का स्थान **इमादुद्दीन रेहान** ने लया जो एक **भारतीय मुसलमान** था।
- **एक अलग समूह का गठन:**
 - **बलबन** अलग हटने को तैयार हो गया लेकिन सावधानी से उसने अपना समूह बनाना जारी रखा। **बलबन** ने **मंगोलों** के साथ भी संपर्क स्थापति कयि थे जिन्होंने **पंजाब** के एक बड़े हसिसे पर कब्ज़ा कर लया था।
 - **सुल्तान महमूद** ने बलबन के समूह की शक्तिके सामने झुककर रेहान को बर्खास्त कर दिया। कुछ समय पश्चात् रेहान पराजति हुआ और मारा गया।
 - **बलबन** ने अपने कई अन्य प्रतदिवंदवियों को नषिपक्ष या बेईमानी से छुटकारा दलाया।
 - वर्ष **1265** में **सुल्तान महमूद** की मृत्यु हो गई।
- **मज़बूत केंद्रीकृत सेना:**

- आंतरिक गडबडी से नपिटने तथा मंगोलों को खदेड़ने के लिये बलबन ने एक मज़बूत केंद्रीकृत सेना का गठन किया जिन्होंने पंजाब में घुसपैठ की और दिल्ली सल्तनत के लिये गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया था।
- दीवान-ए-अरज:
 - उसने सैन्य विभाग (दीवान-ए-अरज) को पुनर्गठित किया और उन सैनिकों को पेंशन दी जो अब सेवा के लायक नहीं थे।
- बलबन ने मेवातियों, राजपूत ज़मींदारों, गंगा-जमुना दोआब और अवध के डकैतों से नपिटने के लिये 'लौह और रक्त' की नीति अपनाई।
- दोआब और कटहार (आधुनिक रोहेलखंड) में बलबन ने जंगलों को काटने, वदिरोही ग्रामीणों को समाप्त करने तथा पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों को गुलाम बनाने का आदेश दिया।
- बलबन ने इन कठोर तरीकों से स्थितिको नयित्तरति किया। अपनी सत्ता की ताकत द्वारा लोगों को प्रभावित करने तथा उन्हें डराने के लिये बलबन ने एक शानदार दरबार बनाए रखा।
- बलबन की मृत्यु:
 - वर्ष 1286 में बलबन की मृत्यु हो गई।
 - नसिंदेह वह दिल्ली सल्तनत विशेष रूप से सरकार और संस्थानों के मुख्य वास्तुकारों में से एक था।
 - राजशाही की सत्ता का दावा करते हुए बलबन ने दिल्ली सल्तनत को मज़बूत किया।
 - मंगोलों के घुसपैठ के वरिद्ध वह उत्तरी भारत की पूरी तरह से रक्षा नहीं कर सका।

गुलाम वंश की वास्तुकला के कुछ उदाहरण:

- गुलाम वंश के शासकों द्वारा नरिमति महत्त्वपूर्ण इमारतें:
 - कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद:
 - यह भारत की सबसे शुरुआती मस्जिदों में से एक है तथा कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा वर्ष 1192 और 1198 के बीच बनवाई गई थी।
 - कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद का अर्थ है 'इस्लाम की ताकत'।
 - यह कुतुब मीनार के उत्तर-पूर्व में बनी हुई है।
 - कुतुब मीनार:
 - लाल और बफ बलुआ पत्थर से बनी कुतुब मीनार भारत में सबसे ऊँची मीनार है।
 - कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1199 ईस्वी में पहली मंजलि तक मीनार की नींव रखी।
 - बाद में उसके उत्तराधिकारी और दामाद शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36 ईस्वी) द्वारा इसमें तीन और मंजलें जोड़ी गई।
 - मीनार के विभिन्न स्थानों पर अरबी और नागरी अक्षरों में कई शिलालेखों से कुतुब के इतिहास का पता चलता है।
 - प्रांगण में लौह स्तंभ पर चौथी शताब्दी ईस्वी की ब्राह्मी लिपि में संस्कृत में एक शिलालेख है, जिसके अनुसार चंद्र नामक एक शक्तिशाली राजा की स्मृति में वशिष्पद के नाम से जानी जाने वाली पहाड़ी पर स्तंभ को वशिष्पुत्र (भगवान वशिष्णु के मानक) के रूप में स्थापित किया गया था।
 - अढ़ाई दनि का झोपड़ा:
 - अढ़ाई दनि का झोपड़ा जिसे "ढाई दनि की मस्जिद" के रूप में भी जाना जाता है भारत के अजमेर, राजस्थान में स्थित एक ऐतिहासिक मस्जिद है।
 - इस मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1199 ईस्वी में करवाया था।
 - नासरुद्दीन मोहम्मद (सुल्तान घारी) का मकबरा:
 - सुल्तान गढ़ी का मकबरा कुतुब मीनार से लगभग 6 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।
 - इसे वर्ष 1231 में इल्तुतमिश ने अपने सबसे बड़े पुत्र और नासरुद्दीन महमूद के अवशेषों पर बनवाया था।
 - शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश का मकबरा:
 - शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का मकबरा कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद के उत्तर-पश्चिम में स्थित है।
 - इस मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश ने स्वयं 1235 ईस्वी में करवाया था।
 - बलबन का मकबरा:
 - गयासुद्दीन बलबन का मकबरा महरौली, नई दिल्ली, भारत में स्थित है, जिसे 1287 ईस्वी में बनाया गया था।

दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था:

- प्रशासनिक व्यवस्था के प्रमुख को सुल्तान कहा जाता था।
- पूरे क्षेत्र का नियंत्रण उसके हाथ में था, सहासन पर बैठने के बाद पूर्ण शक्ति उसके हाथों में होती थी।
- उसे सेना का सर्वोच्च सेनापति कहा जाता था।
- सुल्तान कई प्रकार से प्रशासनिक व्यवस्था का प्रमुख होता था।
- राजधानी शहर और उसके आस-पास के क्षेत्र अक्सर ऐसे क्षेत्र होते थे जिन पर केंद्रीय प्रशासन का प्रत्यक्ष नियंत्रण होता था।
- क्योंकि ये क्षेत्र सम्राट, रईसों, दरबार, शाही वास्तुकला, व्यापार और शहरीकरण के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण थे, इसी कारण प्रशासनिक व्यवस्था भी वसित और स्पष्ट थी।
- ऐतिहासिक राजनीति के कारण केंद्रीय रूप से प्रशासित नियंत्रण और वनियमन तंत्र विकसित करना आवश्यक था।
- शासक वर्गों और कारीगरों, व्यापारियों, सैनिकों आदि जैसे अन्य समूहों की "शोषणकारी" प्रकृति के कारण इस राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिये संसाधनों का प्रबंधन अक्सर साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों से करना पड़ता था।

दिल्ली सल्तनत में कुलीनता का महत्त्व:

- कुतुबुद्दीन बनिा कसिी संघर्ष के सहिसन पर आसीन हुआ क्यौंकि मुइज़ी रईसों ने उसे अपने शासक के रूप में स्वीकार कर लिया और उनके प्रती अपनी वफादारी प्रदर्शति की ।
- दलिली की गददी पर इलतुतमशि का राज्यारोहण भारत में तुर्की अभजात वर्ग के वकिस में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबति हुआ ।
- यह सशस्त्र शक्ति के माध्यम से रईसों द्वारा अपने नेताओं का चयन करने की शक्ति को दर्शाता है ।
- दलिली में कुलीन वर्गों ने शासक के चयन में प्रमुखता हासिल की और दलिली तुर्की शासन की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया ।
- भारत में एक संप्रभु तुर्की राज्य की स्थापना का श्रेय इलतुतमशि को दिया जाता है, उसके समय में कुलीन वर्ग में कुशल प्रशासक हुआ करते थे ।
- इलतुतमशि की मृत्यु (1235) के बाद बलबन (1269) के राज्यारोहण तक चहिलगानी दासों (40 कुलीनों का समूह जिसमें बलबन भी था) ने उत्तराधिकार संबंधी मामलों का नरिाकरण किया ।
- बलबन ने तुर्की कुलीनों के प्रभुत्व को समाप्त कर ताज के वरचस्व को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया ।
- बलबन के राज्याभषिक के बाद यह स्पष्ट हो गया कि वंशानुगत सिद्धांत अब प्रासंगिक नहीं था ।
- जलालुद्दीन खलिजी (1290) के सहिसन पर बैठने के बाद यह स्थापित हो गया कि वंशानुक्रम हमेशा संप्रभुता और राजत्व का आधार नहीं था । सहिसन के उत्तराधिकार में योग्यता और बल भी महत्त्वपूर्ण कारक थे ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2019)

1. दलिली सलतनत के राजस्व प्रशासन में राजस्व वसूली के प्रभारी को 'आमलि' कहा जाता था ।
2. दलिली के सुल्तानों की इक्ता प्रणाली एक प्राचीन देशी संस्था थी ।
3. 'मीर बखशी' का पद दलिली के खलिजी सुल्तानों के शासनकाल में अस्तित्व में आया ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- दलिली सलतनत में कसिनों से सीधे लगान वसूलने और जमीन की पैमाइश का काम आमलियों का था । अतः कथन 1 सही है ।
- इक्ता प्रणाली पश्चिमि एशिया में विकसित हुई, विशेष रूप से फारस में बायडि राजवंश के तहत, जिसने इस प्रणाली को औपचारिक रूप प्रदान किया तथा इस राजवंश ने 10वीं और 11वीं शताब्दी के दौरान शासन किया । भारत में इस प्रणाली को संस्थागत दर्जा इलतुतमशि (मामलुक राजवंश) द्वारा प्रदान किया गया था । इक्ता प्रणाली के तहत साम्राज्य की भूमि को इक्ता नामक भूमि के विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'इक्तादार' के रूप में पहचाने जाने वाले अधिकारियों को सौंपा गया था, अतः कथन 2 सही नहीं है ।
- गियास उद-दीन बलबन (1266 -1287) ने 'दीवान-ए-अर्ज' नामक एक सैन्य विभाग की स्थापना की थी, जिसके तहत शाही सेना के संगठन और रखरखाव के लिये 'अरीज-ए-मामुलक' उत्तरदायी होता था । अलाउद्दीन खलिजी ने घोड़ों की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ दीवान-ए-अर्ज विभाग की दक्षता में वृद्धि करने के लिये नकली नंबरगि को खत्म करने हेतु 'दाग' प्रणाली (यानी घोड़ों की ब्रांडिंग) की शुरुआत की । मीर बक्शी मुगल भारत के दौरान सैन्य विभाग का प्रमुख था । अतः कथन 3 सही नहीं है ।

अतः विकल्प (a) सही उत्तर है ।